सच्चरित्र का यथार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सच्चरित्र का अर्थ है उत्तम चरित्र। जीवन में चरित्र का सबसे अधिक महत्व है। भारतीय संस्कृति में चरित्र को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। चरित्र की ही सर्वत्र पूजा होती है। कहा गया है कि यदि धन नष्ट हुआ तो मानना चाहिए कुछ नहीं नष्ट हुआ। यदि स्वास्थ्य गड़बड़ हुआ तो मानना चाहिए कुछ नुकसान हुआ। किन्तु यदि चरित्र नष्ट हो गया तो यह समझना चाहिए कि जीवन की सम्पूर्ण पूंजी ही नष्ट हो गयी। बड़े–बड़े महात्मा लोगों ने जीवन में ख्याति अर्जित की है उस ख्याति को यदि चरित्र के ऊपर दाग लग जाये तो तत्काल ही नष्ट हो जाती है। चरित्र की रक्षा से जीवन अवधि बढ़ती है। चरित्र वह हीरा है जो एक बार टूट जाये तो फिर जुड़ता नहीं। इसे बहुत बचाकर रखना चाहिए। संसार के अन्दर स्त्री और पुरुष दो विपरीत लिंग है। दोनों में परस्पर आकर्षण होना स्वाभाविक है। समाज व्यवस्था को बनाये रखने के लिए विवाह संस्कार की व्यवस्था की गई है, जिससे जीवन शयन पूर्वक चलता रहे। यह जीवन की एक मर्यादा है। भारतीय साहित्य में कहा गया है– मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् अर्थात् परायी स्त्री को माता के समान और पराये धन को मिट्टी के ढ़ेले के समान समझना चाहिए। भारतीय संस्कृति में स्त्रियों के प्रति सम्मान देने के लिए यह व्यवस्था की गई है। चरित्रवान् व्यक्ति पर सभी विश्वास करते है। ईमानदारी, झूठ न बोलना, बड़ों का सम्मान करना, छोटों को प्यार देना, सामाजिक मूल्यों में विश्वास करना, वसुधैव कुटुम्बकम् को बढ़ाना ऐसे कुछ नियम हैं जो सच्चरित्र का निर्माण करते हैं। आचार्य मनु ने इस देश में उत्पन्न शिष्ट लोगों से संसार के सभी मनुष्यों को अपने–अपने चरित्र को सीखने की शिक्षा दी है–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः।

महाभारत में वेदव्यास ने भी यही कहा है कि सभी आगमों में आचार ही प्रधान है–'सर्वागमानां आचारः प्रथमं परिकल्पते'। आचार से ही धर्म की उत्पत्ति होती है। आचार धर्म का मेरुदण्ड है, जिसके बिना धर्म टिक नहीं सकता। आचार का पालन करने वाला मानव सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। सच्चरित्र निर्माण में संयम का बहुत महत्व है। संयम ही जीवन है। संयम सत्यं, शिवम् और सुन्दरम् है। संयम का अर्थ है नियन्त्रण करना। मन वाणी और शरीर पर नियन्त्रण करना संयम कहलाता है। संयम जीवन का बहुत बड़ा सूत्र है। सभी प्राणियों के प्रति दया भाव रखना संयम है। कहा भी गया है सर्व भूतेषु संयमः अहिंसा। अर्थात् सभी प्राणियों पर संयम भाव रखना अहिंसा कहलाता है। जिससे संसार के कारणों से आत्मा का गोपन अर्थात् आत्मा की रक्षा होती है वह संयम है। संयम का शाब्दिक अर्थ है– सुरक्षा। मन, वचन, काय को सावद्य क्रियाओं से रोकना संयम है। असत्य, कर्कश, अहितकारी, एवं हिंसाकारी भाषा का प्रयोग नहीं करना, स्त्रीकथा, राजकथा, चोरकथा, भोजनकथा, आदि वचन की अशुभ प्रवृत्ति और असत्य वचन का परिहार करना वाणी का संयम है। मन के चिन्तन को भाषा वर्गणा द्वारा प्रगट किया जाता है। शारीरिक क्रिया को संरम्भ, समारम्भ और आरम्भ में प्रवृत्त न करना, उठने–बैठने, खड़े होने खड्डा, खाई आदि लांघने और इन्द्रियों के प्रयोग में संयम रखना, यतनापूर्वक सत् प्रवृत्त करना शरीर का संयम है। इन्द्रियों पर निरोध करना भी संयम है। जब इन्द्रियों पर नियन्त्रण किया जाता है तो विषयों से इन्द्रियों को हटाकर आत्मकेन्द्रित किया जाता है। यह क्रिया अभ्यास के द्वारा सम्पन्न होती है। चक्षु, श्रोत, घ्राण, जिह्वा और स्पर्श ये पांच इन्द्रियां हैं अर्थात् मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम की शक्ति का नाम इन्द्रिय है।

इन्द्रियों को अपने–अपने विषयों की प्रवृत्ति से रोकना इन्द्रिय संयम है। जिस प्रकार से उन्मार्गगामी घोड़ों को लगाम के द्वारा निग्रह किया जाता है वैसे ही तत्त्वज्ञान की भावना के द्वारा इन्द्रियरूपी घोड़ों को विषयरूपी उन्मार्ग से हटाया जाता है। जो साधक विषयों से इन्द्रियों को विमुख नहीं करता, इन्द्रियां उसके तेज को नष्ट कर देती हैं। जिन जीवों की इन्द्रियां जीवित हैं, उनका दुःख औपाधिक नहीं है, स्वाभाविक है, क्योंकि उनकी विषयों में रति देखी जाती है जैसे, हाथी बनावटी हथिनी के शरीर को स्पर्श करने के लिए दौड़ता है और पकड़ लिया जाता है। इसी प्रकार मछली बडिश के मांस को चखने के लोभ से प्राण खो देती

है। भ्रमर घ्राणेन्द्रिय के विषय से सताया हुआ संकुचित हुये कमल में गंध के लोभ से कैद होकर दुःखी होता है। पतंगा दीपक की ओर दौड़कर जल मरता है और मृग श्रोतेन्द्रिय के विषयवश मधुरध्वनि के वशीभूत हो शिकारी के हाथों मारा जाता है। इससे ज्ञात होता है कि इन्द्रियां दुःखरूप ही हैं। इन्द्रियों के वशीभूत होकर कार्य करने से चरित्र प्रभावित होता है। इसलिए इन्द्रियों पर बुद्धि का नियन्त्रण आवश्यक है। भगवान राम का चरित्र समाज के सामने एक आदर्श चरित्र है। उन्होंने मर्यादा की रक्षा के लिए सबकुछ त्यागकर वनगमन को स्वीकार करके समाज के सामने अपने चारित्रिक वैशिष्ट्य को प्रस्तुत किया। प्राण जाय पर वचन न जायी का द्रष्टान्त उपस्थित कर उन्होंने समाज में आदर्श स्थापित किया। रूपये में निन्यानवें पैसे चरित्र का महत्व है और एक पैसे में अन्य वस्तुओं का। इसीसे सच्चरित्र के यथार्थ को समझा जा सकता है।